भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की पत्रिका

वर्ष 1 | अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 2000 | अंक 4

मेकाले

भारतीय अस्मिता का विध्वंशक

अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा-प्रणाली का प्रारम्भ कैसे हुआ, इसका इतिहास इतना घृणित और शर्मनाक है कि स्वतंत्र भारत के प्रबुद्ध नागरिकों का सिर लज्जा से नत हो जाता है। इस इतिहास को जानने और समझने के लिए उस कालावधि में जाना पड़ेगा जब अपने देश में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का क्षेत्रीय आधिपत्य बढ़ता जा रहा था। उसने थोड़े समय में भारत के विस्तृत भू-भाग पर कब्जा जमा लिया। उसकी मंशा अब व्यापार की अपेक्षा राजनीतिक सत्ता को सुस्थिर करने की हुई। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ तक अंग्रेजी राज्य देश के चारों दिशाओं में फैल गया।

राजनीतिक सत्ता के फैलाव के साथ इंग्लैण्ड में बैठे कम्पनी के सूत्रधारों ने महसूस किया कि अधिकृत भू-भागों के लोगों की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। सन् 1813 में आज्ञा-पत्र अधिनियम (Charter Act) के 43वें अनुच्छेद में शिक्षा देने की बात निश्चित हुई। उस अनुच्छेद में कहा गया कि सपरिषद गवर्नर-जनरल का विधिसम्मत कर्त्तव्य होगा कि किराये, राजस्व तथा क्षेत्रीय आधिपत्य से जो आमदनी होती है, उसमें से सैनिक, असैनिक और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों का खर्च काटकर तथा कर्ज का ब्याज देकर जो धनराशि बचती है, उसमें से प्रतिवर्ष एक लाख रुपये शिक्षा पर खर्च के लिए रखे जायँ। यह राशि साहित्य के उन्नयन और भारत के विद्वत्जनों को प्रोत्साहित करने पर खर्च हो। साथ ही ध्यान में यह भी रखना चाहिए कि भारत में जो ब्रिटिश भू-भाग हैं, उनके वासिन्दों में विज्ञान (साइन्स) के विभिन्न अंगों के ज्ञान का संवर्धन हो।

शिक्षा की नीति तो तय हो गई, किन्तु लक्ष्य-प्राप्ति की प्रणाली क्या हो, जिससे साहित्य के उन्नयन और पुनर्जीवन तथा भारत के विद्वत्जनों को प्रोत्साहन प्रदान किया जा सके। इस प्रश्न पर चार्टर का 43वाँ अनुच्छेद अस्पष्ट था। बस, यहीं से शिक्षा-प्रणाली का प्रश्न वाद-विवाद, तर्क-वितर्क में शुरू हुआ। यह प्रश्न बारह वर्षों तक विवाद के घेरे में लुढ़कता गया। कम्पनी के उच्चाधिकारी दो खेमे में बँट गए। एक खेमा प्राच्यवादी और दूसरा पाश्चात्यवादी बन गया। इसी मध्य लॉर्ड टी०बी० मेकाले गवर्नर-जनरल की कार्यपालक परिषद का विधि-सदस्य नियुक्त होकर भारत आ गया। वह अंग्रेजी साहित्य का पण्डित था। विलियम बेंटिक गवर्नर-जनरल थे। शिक्षा-प्रणाली सु-निश्चित करने की रस्साकशी चल रही थी। मेकाले की बुद्धिमत्ता से बेंटिक अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने मेकाले को चार्टर अधिनियम के 43वें अनुच्छेद को स्पष्ट रूपेण परिभाषित करने को कहा।

मेकाले अपने देश को युरप के देशों में श्रेष्ठ और उन्नत मानता था। इधर भारत में ईसाई मिशनरियाँ संस्कृत, अरबी और फारसी को शिक्षा-प्रणाली का माध्यम बनाने का जोरदार विरोध कर रही थीं। इससे मेकाले को भारी बल मिला। उसने भारतीयों को संस्कारहीन बनाने का प्रकारान्तर से संकल्प कर लिया। 43वें अनुच्छेद को परिभाषित करते हुए उसने लम्बा वक्तव्य तैयार किया, जिसमें संस्कृत, अरबी और फारसी को अप्रासंगिक घोषित करते हुए जनपदीय बोलियों को गँवारपन का द्योतक कहा। उसने अंग्रेजी भाषा की जबरदस्त वकालत करते हुए कहा कि प्राच्य-शास्त्रों में क्या धरा है। यह समय विज्ञान का है जिससे ज्ञान का नवोन्मेष होता है। इतना ही नहीं, उसने अंग्रेजी की श्रेष्ठता और भारतीय वाङ्मय को समयानुसार अनुपयोगी बताते हुए तर्कों का जाल बिछा दिया।

मेकाले ने कम्पनी के सूत्रधारों को हतप्रभ करते हुए कहा कि अंग्रेजी के शिक्षा-माध्यम से भारतवासी हमेशा-हमेशा के लिए गुलाम बने रहेंगे, उनकी देशभक्ति अपने देश के प्रति नहीं बल्कि ब्रिटेन के प्रति रहेगी। अंग्रेजी शिक्षा-माध्यम के प्रसार से बुद्धिजीवियों का जो वर्ग तैयार होगा, वह रूप-रंग से भारतीय और अभिरुचि से अंग्रेज होगा। इसलिए भारत में शिक्षा-प्रणाली का माध्यम अंग्रेजी के सिवाय कोई दूसरी भाषा नहीं हो सकती। उधर भाषा के प्रश्न पर दो खेमे हो गए थे। उसका तथा ईसाई मिशनरियों के विरोध का लाभ उठाकर मेकाले ने गवर्नर-जनरल विलियम बेंटिक को सलाह देते हुए संकल्प का प्रारूप उनके सामने विचारार्थ रखा। उसमें सुस्पष्ट रूप से कहा गया कि भारतवासी नैतिक और बुद्धि-रूप से ब्रिटेन के गुलाम हो जायँगे।

लॉर्ड विलियम बेंटिक (कार्यकाल 1828-1835) भाषा-प्रणाली के प्रश्न पर पूर्ण रूप से मेकाले पर निर्भर था। दोनों में गहन विचार-विनिमय हुआ। मेकाले उसकी प्रज्ञा-शक्ति पर छा गया। उसने चार अनुच्छेदों में संकल्प का मसौदा तैयार कर दिया। विलियम बेंटिक ने उस संकल्प के नीचे केवल एक वाक्य लिखकर समर्थन कर दिया। उसने लिखा कि 'इस कार्यवृत्त में जिस मनोभाव की अभिव्यक्ति हुई है, उससे मैं पूर्ण रूप से सहमत हूँ।' 7 मार्च 1835 को भारतीय अस्मिता के कालनेमि का मनोभाव कार्यरूप में परिणत कराने के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया।

संकल्प का मसौदा संक्षेप में इस प्रकार था—

पहला : सपरिषद महामान्य लार्डशिप (गवर्नर-जनरल) का अभिमत है कि ब्रिटिश सरकार चाहती है कि भारतवासियों में यूरोपीय साहित्य तथा

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

विज्ञान का संवर्धन किया जाय, और, शिक्षा के अभिप्राय से जो धन-राशि रखी गई है, उसे केवल अंग्रेजी-शिक्षा पर ही अच्छी तरह खर्च किया जाय।

दूसरा : गवर्नर-जनरल का इरादा देशी भाषा के जो स्कूल या कॉलेज चल रहे हैं, उनको समाप्त करने का नहीं है। छात्रवृत्ति मिलती रहेगी, किन्तु वहाँ से उत्तीर्ण होकर जो छात्र देशी भाषा के माध्यम से पढ़ना चाहेंगे, उन्हें छात्र-वृत्ति नहीं मिलेगी। इसी प्रकार प्राच्य विद्या के प्राध्यापक यदि स्थान रिक्त करेंगे तो उनकी पुनर्नियुक्ति पर आवश्यकतानुसार विचार होगा।

तीसरा : गवर्नर-जनरल की जानकारी में यह बात आयी है कि सरकारी शिक्षा-समिति ने अधिकांश धन-राशि प्राच्य विद्या के ग्रंथों के मुद्रण पर खर्च कर डाली है। निर्देश दिया जाता है कि शिक्षा के निमित्त जो राशि निर्धारित है, उसका एक पैसा भी अब से उस पर खर्च न किया जाय।

चौथा : गवर्नर-जनरल का निर्देश है कि शिक्षासुधार के निमित्त सरकारी समिति के अधीन जो धन-राशि है, वह अबसे देशवासियों को अंग्रेजी के माध्यम से अंग्रेजी साहित्य तथा विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने पर ही खर्च की जाय। इस लक्ष्यप्राप्ति के लिए समिति योजनानुसार जो राशि खर्च करना चाहती है, वह सरकार के समक्ष पेश करे।

उपर्युक्त संकल्प के आलोक में क्या रंचमात्र भी सन्देह की गुंजाइश रह गयी है कि गुलामी हमारे सिर पर चढ़कर चीत्कार नहीं कर रही है ? सोचना होगा कि मेकाले का कालकूट आजाद भारत के हम नागरिक कब तक प्रमादग्रस्त होकर पीते रहेंगे ?

मेकाले के बौद्धिक प्रहार से हम भारतवासी, जो अपने को स्वतंत्र कहने के हकदार मानते हैं, मूर्च्छित हैं। हमें राजनीतिक सत्ता वर्षों के संघर्ष से मिली, किन्तु हमारी सांस्कृतिक विरासत विलुप्त होती चली जा रही है। हमारी हिन्दी, जो हमारे संस्कार की भाषा संस्कृत की लाड़ली बेटी है, अपना हक नहीं पा सकी। अंग्रेजी ने हमें पूर्ण रूप से अपने संस्कार में गुलाम बना लिया। हर देश का परिष्कृत प्रतीक उसकी भाषा होती है। एशिया के अनेक देश इसके उदाहरण हैं। किन्तु अंग्रेजी की माया में बन्दी बनी हमारे देश की राजसत्ता बेफिक्र है। हम अपनी भाषा का वांछनीय स्थान कब और कैसे प्राप्त करेंगे ? समाज के प्रबुद्ध नागरिकों के सामने यह ज्वलन्त सवाल उपस्थित है। उठिए, सोचिए और अपनी गरिमा को वापस लाइए। जय भारती !

—पारसनाथ सिंह

हिन्दी दिवस क्यों?

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने की रस्म अदायगी की जाती है, क्या हिन्दी देश की सभ्यता और संस्कृति को पूर्णतया अभिव्यक्त करती है। श्रीकृष्ण ने गोप बालकों के लिए गोवर्धन पर्वत धारण किया था, उनमें गोप बालकों की लकुटिया भी लगी थी। आज हिन्दी की भी वही स्थिति है। जब तक भारत की सभी भाषाएँ मिलकर हिन्दी को समृद्धि नहीं करेंगी, हिन्दी सरकारी कागजों में राष्ट्रभाषा भले ही बनी रहे, प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस का समारोह आयोजित होता रहे, किन्तु हिन्दी सम्पूर्ण भारतीय जनमानस की भाषा नहीं बन सकेगी। भारतीय भाषाओं की समृद्धि से ही भारतीय अस्मिता की रक्षा हो सकेगी। आज हमें अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव से ही मुक्त नहीं होना है, उससे प्रभावित सभ्यता और संस्कृति से भी मुक्ति पाना है, यह तभी सम्भव है जब भारत की समस्त भाषाओं की नदियों का जल गंगा में मिलकर भारतीय मनीषा का अभिषेक करें।

—सम्पादक

''यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गये होते तो यह समझने में हमें देर न लगती कि अँग्रेजी के शिक्षा का माध्यम होने से हमारी बौद्धिक चेतना जीन से कटकर दूर हो गई है, हम अपनी जनता से अलग हो गये हैं, जाति के सर्वश्रेष्ठ विभागों का विकास रुक गया है और जो विचार हमें अँग्रेजी के माध्यम से मिले, उन्हें हम जनता में फैलाने में नाकामयाब रहे हैं। जो विरासत हमें बाप दादों से हासिल हुई, उसके आधार पर नवनिर्माण करने के बदले, हमने उस विरासत को भूलना सीखा है। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास में नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक के अलावा ट्रेजडी का विषय है।''

कलकत्ता, 27.12.1917

— महात्मा गाँधी

मातृभाषा राजभाषा

भाषा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। मनुष्योत्तर प्राणी भाषा का विकास नहीं कर सके। सो मनुष्य-जाति की तरह बाकी के प्राणी अपना अनुभव दूसरे प्राणी को बताने में असफल रहे। भाषा ने मनुष्य को अपने पूर्वजों के भी अनुभव संजोने और प्रसारित करने की सुविधा दी। भाषा मनुष्य के अन्तरतम में उठने वाले आत्यंतिक विचार को भी सामूहिक बनाने का हथियार बनी। भारतीय समाज रचना की मजबूती का आधार भी भाषा और आचार में से ही खोजना होगा। भारत ने मनुष्य से परे सूरज चाँद, तारों और समस्त सृष्टि से भी बातें करने वाली भाषा गढ़ी। वैदिक ऋषियों ने वायु, अग्नि, मेघ सविता और इन्द्र के साथ-साथ वनस्पतियों से भी बतियाने वाली ऋचाएँ गायी। हिन्दी भारत के इसी सनातन अनुभव, ज्ञान, प्रज्ञा और मेधा वाले राष्ट्रजीवन की भाषा थी। हिन्दी के पास सतत् प्रवाही ऊर्जा देने वाला संस्कृत का 'पावर हाउस' है। वह संस्कृत से ऊर्जा लेती है। संस्कृति से जीवन रस पाती है। भारत ने हिन्दी लिपि को 'देवनागरी' जैसा नाम दिया क्योंकि हिन्दी का अधिष्ठान दिव्यता है। भारतीय समाज का दिव्य मन देवनागरी लिपि में अभिव्यक्त हुआ। दिव्य और देव 'सम्पूर्ण प्रकाश' के सगे भाई हैं। मात्र भाषा ही राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनती तो मातृ समाज, राष्ट्र समाज और राजसमाज एक रूप होते।

—हृदयनारायण दीक्षित

राष्ट्रीय भाषा आयोग

सभी भारतीय भाषाओं के विकास, उनके आपसी संवाद और आदान-प्रदान, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर इनकी व्यापक स्वीकृति के लिए 'राष्ट्रीय भाषा आयोग' गठित करना चाहिए। अभी तक भारतीय भाषाओं के लेखकों तथा अन्य विचारकों की जितनी संगोष्ठियाँ विभिन्न सरकारी, अर्धसरकारी अथवा निजी संस्थानों द्वारा आयोजित की जाती हैं उन सभी के मध्य सामान्यत: विचार-विमर्श, भाषण और संवाद का माध्यम अंग्रेजी होती है। यह दायित्व प्रस्तावित 'राष्ट्रीय भाषा आयोग' का होना चाहिए कि वह सभी भाषाओं के मध्य अत्यन्त सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में कार्य व्यवहार के रूप में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करे, जिससे कुछ समय में ही हिन्दी इस देश की सही अर्थों में सम्पर्क भाषा के रूप में अपना ली जाए।

—डॉ० महीपसिंह

❑ ❑

हिन्दी को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे अन्य किसी भी भाषा से उसका दुराव, प्रतिस्पर्धा अथवा शमुभाव विकसित हो जाए।

हिन्दी केवल संविधान की भाषा बनकर रह गई है। ऐसे में आवश्यकता हिन्दी के लिए एकजुट होकर प्रयास करने की है। खेद की बात है कि आज तक एक भी विधेयक हिन्दी में पारित नहीं हुआ।

—नरेन्द्र मोहन, सदस्य राज्यसभा
सम्पादक दैनिक जागरण

प्रतिभा-पलायन

अंग्रेजी शिक्षा का दुखद पहलू है कि वह हमारी प्रतिभाओं को देश से ही विमुख करती है। अँग्रेजी आज भारत में व्यक्तिगत प्रगति की माध्यम है। अनेक लोगों के लिए यह अमरीकी ग्रीनकार्ड प्राप्त करने में सहायक होती है। हजारों प्रतिभावान प्रति-वर्ष सदा के लिए देश छोड़ जाते हैं।

अँग्रेजी शिक्षा का परिणाम यह है कि व्यक्ति में राष्ट्रीयता की भावना लुप्त होती जा रही है, वह पूर्णतया भौतिकवादी हो गया है। अपनी संस्कृति, अपने देश के प्रति उसकी निष्ठा समाप्त हो रही है। क्या यह विचारणीय नहीं है ?

मत-सम्मत

'भारतीय वाङ्मय' संग्रहणीय प्रकाशन है। इतनी अधिक सामग्री इतने थोड़े में कैसे प्रस्तुत कर दी, आश्चर्य ही हुआ। लेख विचारमूलक हैं, प्रतिबद्धता से ऊपर हैं और संकीर्णता से भी। उनके ऐतिहासिक लेखन का स्वर है और उदात्तता भी। हिन्दी के गौरवमय अतीत के साथ-साथ वर्तमान प्रश्न है जो सोचने को बाध्य करते हैं। इसका मंच व्यापक है, हिन्दी और राष्ट्रीयता को केन्द्र में रखकर इसका वैचारिक संसार अखिल भारतीय है। विश्व साहित्य की हलचलों तक समेटता हुआ। मैं इसका उज्ज्वल भविष्य देख रहा हूँ। **—राय आनंदकृष्ण**

सीता निवास, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी 221005

★★★

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है, वह प्रशंसनीय है तथा नवीन ज्ञान संवर्द्धक है। आशा है आपकी पत्रिका सम्पूर्ण भारत से प्रकाशित होने वाले नूतनतम हिन्दी प्रकाशनों को निरपेक्ष भाव से निरन्तर सूचित करती रहेगी तथा नूतन साहित्यकारों की उपलब्धियों को प्रकाश में लाती रहेगी। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण की दृष्टि से आपका यह प्रकाशन अभिनन्दनीय है।

—डॉ० रूपनारायण पाण्डेय, प्रयाग

★★★

'भारतीय वाङ्मय' मुझे मिला। आपने बहुत अच्छा कार्य किया। मैंने सभी पृष्ठ रुचिपूर्वक पढ़े। पढ़ना और अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ना, इन दोनों बातों का फर्क हम कब महसूस करेंगे? अंक-3 में जो सामग्री पायी वह बहुमूल्य लगी। **—गुणवंत शाह,** बड़ौदा

(गुजराती साहित्य के विशिष्ट विद्वान्)

★★★

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका मुझे उपादेय लगी। हिन्दी जगत को, प्रकाशकों, लेखकों को समवेत करने में इसकी सही भूमिका हो। **—रमेशचन्द्र शाह**

निराला सृजन पीठ, भोपाल

★★★

'भारतीय वाङ्मय' के जुलाई-अगस्त अंक में आपने अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व और भारतीय अंग्रेजी के मायाजाल में फँसी भारतीय अस्मिता के खण्डित मानस की ओर सार्थक ध्यान दिलाया है। इसके लिए हार्दिक बधाई। **—स्वदेश भारती,** अध्यक्ष

राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, कलकत्ता

★★★

पत्रिका सूचना संकलन की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **—डॉ० अंजनीकुमार दुबे 'भावुक'**

नेहरू कालेज, पैलापुल, कछार (असम)

★★★

'भारतीय वाङ्मय' नामकरण अच्छा है और तदनुसार अंक में सामग्री का सम्पादन है।

—डॉ० राजमल बोरा, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

★★★

'भारतीय वाङ्मय' अपने तरह की एक अलग पत्रिका है जो विभिन्न सूचनाओं तथा सांस्कृतिक महत्त्व की जानकारी देती है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह पत्रिका अहिन्दी प्रदेश के लिए कार्य करती है। जिससे हिन्दी प्रदेश की छात्राओं को प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलेगी। **—खैरूननिशा,**

शिलांग

★★★

'भारतीय वाङ्मय' विश्व तथा भारतीय भाषाओं के हितों की रक्षा का आन्दोलन चलाने वाली पत्रिका बन रही है। इसके ये अंक यही सन्देश दे रहे हैं। निकट भविष्य में यह पत्रिका अपने नाम को सार्थक करेगी।

—डॉ० कमलकिशोर गोयनका, दिल्ली

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

इंदिरा गाँधी कला केन्द्र के ट्रस्टियों ने आम सहमति से प्रमुखन्यायविद् ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त, राज्यसभा के सदस्य श्री लक्ष्मीमल सिंघवी को दस वर्षों के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया है। बीस सदस्यीय ट्रस्ट के प्रमुख सदस्य हैं—पूर्व राष्ट्रपति आर० वेंकटरमन, पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री अनंत कुमार, शहरी विकासमंत्री श्री जगमोहन, एम०वी० कामत, सोनल मान सिंह, प्रो० पी०वी० कृष्णभट्ट, प्रो० एन०आर० शेट्टी, विद्यानिवास मिश्र, अंजली ईला मेनन, प्रो० यशपाल, एन० आर० शेट्टी, एन० नरसिंहा और वेदांत एस० शर्मा।

केन्द्रीय हिन्दी समिति

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी, की अध्यक्षता में 38 सदस्यीय केन्द्रीय समिति का गठन किया गया है। समिति के 21 गैर सरकारी सदस्य हैं—उद्योगपति राहुल बजाज, निर्मल वर्मा, पांचजन्य सम्पादक तरुण विजय, सीताकांत महापात्र (उड़िया साहित्यकार), बी०वी० कामथ, प्रसिद्ध रंगकर्मी, जयन्त विष्णु नार्लिकर प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, सुधाकर पाण्डेय, बजरंगलाल गुप्त, डॉ० ओ०पी० अग्रवाल, प्रो० डी०पी० सैनी, राधेश्याम खेमका (सम्पादक-कल्याण), गुणकर मुले, शेषेन्द्र शर्मा, पुरुषोत्तम लाल चतुर्वेदी, आर० शौरीराजन, मधुकर राव चौधरी, बी०एस० शांताबाई और पालचंद्र सुमन।

सरकारी सदस्यों में गृहमंत्री, मानव संसाधन मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, संचार मंत्री, हिमाचल, पंजाब, गुजरात, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश और सिक्किम के मुख्यमंत्री सहित अनेक सांसद इस समिति के सदस्य हैं।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, 584 महात्मा गाँधी मार्ग, इन्दौर-452001 प्रकाशित, अप्रकाशित, दुर्लभ जैन पाण्डुलिपियों, ग्रन्थों की विस्तृत सूची तैयार कर रहा है। पुस्तकालयों, जैन मन्दिरों तथा व्यक्तिगत संग्रहों को शोधाधिकारी डॉ० महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज' को इसकी जानकारी देनी चाहिए।

निराला शताब्दी के श्रेष्ठ कवि

साहित्यिक पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' ने एक सर्वेक्षण किया है जिसके आधार पर युग प्रवर्तक कवि **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** को बीसवीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित किया है। इसके पूर्व प्रेमचंद को शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ कहानीकार घोषित किया गया है। 'वर्तमान साहित्य' (सम्पादक—श्री विभूति नारायण राय) ने निराला समर्थित शताब्दी कविता विशेषांक प्रकाशित किया है जिसमें 'निराला' पर लिखी गई कविताओं का संकलन भी है।

इंटरनेट, वेबसाइट, हिन्दी

अभी तक इंटरनेट पर अँग्रेजी भाषा का एकाधिकार था, अब हिन्दी की भी पहचान बनने लगी है। विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। हिन्दी विश्व भाषा बनती जा रही है। इंटरनेट इसमें सहायक सिद्ध होगा। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अशोक वाजपेयी ने इंटरनेट पर कुछ साहित्यिक नोट उपलब्ध कराये हैं। वाराणसी की नागरी प्रचारिणी सभा तथा प्रयाग का हिन्दी साहित्य सम्मेलन इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। रवीन्द्र कालिया की पुस्तक 'गालिब छुटी शराब' इंटरनेट पर अपनी पहचान बना चुकी है।

इसी दिशा में मुम्बई में सुप्रसिद्ध पत्रकार डॉ० वेदप्रताप वैदिक की अध्यक्षता में **वेबसाइट राजभाषा** डॉट काम बनाने का कार्य शुरु कर दिया गया है। पश्चिम रेलवे में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री राजेन्द्र गुप्ता ने रेलवे के लिए हिन्दी वेबसाइट तैयार की है।

महीप सिंह की समग्र कहानियों का लोकार्पण

''**महीप सिंह** की कहानियों में बड़ी सूक्ष्म सहजता और गहरी आत्मीयता है। उनमें जीवन जैसा है, वैसा दिखता है—लेकिन कहीं किसी एक बिन्दु पर वे कहानी को ऐसी चमक देते हैं कि सब कुछ का अर्थ बदल जाता है।'' विगत 8 जुलाई को **प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने प्रख्यात हिन्दी कथाकार महीप सिंह की समग्र कहानियों के अभिव्यंजना द्वारा प्रकाशित तीन खण्डों (सुबह की महक, क्षणों का संकट, सम्बन्धों का सन्नाटा) का लोकार्पण करते हुए ये उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने इस अवसर पर महीप सिंह के साथ अपने पुराने सम्बन्धों को याद करते हुए कहा कि लगभग पचास वर्ष पूर्व मैं जिन पत्रों का सम्पादन करता था, महीप सिंह उनमें लिखा करते थे। उस समय भी वे अपने स्वतंत्र विचार रखते थे और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देते थे। प्रधानमंत्री ने महीप सिंह के लेखन के लिए शुभकामनाएँ देते कहा कि वे हमेशा लिखते रहें, राजनीति में आएँ, तब भी लिखते रहें।

साहित्यिक पत्रिका का पुनर्प्रकाशन

'आलोचना' का स्वागत

सम्पादक : **नामवर सिंह** प्रकाशक : **राजकमल प्रकाशन,** नई दिल्ली

हिन्दी की प्रख्यात पत्रिका 'आलोचना' दस वर्षों तक बन्द रहने के बाद अब नये तेवर और नई सजधज के साथ पुन: प्रकाशित हुई है। पुनर्नवा 'आलोचना' का 'सहस्राब्दी अंक एक' हमारे सामने है। यह पूरा अंक 'फासीवाद और संस्कृति का संकट' विषय को केन्द्र में रखकर प्रकाशित हुआ है। यह अंक आज के बढ़ते हुए फासीवाद खतरे के विरुद्ध प्रतिरोध की समवेत आवाज के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सम्पादक का दावा है कि 'आलोचना' के लम्बे इतिहास में प्रतिरोध के ऐसे क्षण पहले भी आए हैं। यही नहीं, उसका यह भी दावा है कि 'आलोचना' पत्रिका ने ही पहली बार भारत में फासीवादी खतरे की चेतावना दी थी। सम्पादक के शब्द हैं—

''प्रतिरोध का ऐसा ही एक क्षण है अप्रैल-जून 1967 की आलोचना का प्रथम अंक जिसने पहली भारत में फासीवादी खतरे की चेतावनी दी थी। यह और बात है कि उस समय वह खतरा टल गया। लेकिन आज जब वह फासीवाद सचमुच आ पहुँचा है तो हर दरवाजे पर दस्तक देना हमारा फर्ज बनता है।''

कहना न होगा कि अतिशय आत्मविश्वास के चलते ऐसा दावा पेश करके आलोचना-सम्पादक ने भारत में समाजवादी विचारधारा के लम्बे इतिहास और साहित्य के माध्यम से फासीवादी शक्तियों के विरुद्ध उसके सशक्त प्रतिरोध के प्रति अपने अज्ञान का परिचय दिया है। हमारे सामने 'काशी विद्यापीठ', वाराणसी से प्रकाशित होने वाली 'जनवाणी' पत्रिका का अक्टूबर 1947 का अंक खुला हुआ है। इस अंक का सम्पादकीय है—'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—फासिस्ट संस्था'। चार पृष्ठों के विचारपूर्ण सम्पादकीय में यह प्रतिपादित करने के बाद कि संघ राजाओं अल्पसंख्यक जमीदारों और पूँजीपतियों के हितों का रक्षक है, निष्कर्ष रूप में कहा गया है—''और इतिहास बताता है कि अंतिम घड़ी में इन्हीं के हितों के लिए शुद्ध राष्ट्रीयता और शुद्ध जातीयता के नाम पर दूसरी जाति या दूसरे सम्प्रदाय को नष्ट करने का नारा लगाकर तथा सैनिक संगठन के साथ फासिज़्म पैदा होता है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ऐसी ही फासिस्ट संस्था है। इससे प्रत्येक व्यक्ति को सावधान हो जाना चाहिए''। अत: यह कहना सत्य नहीं है कि सबसे पहले सन् 1967 (अप्रैल-जून) में 'आलोचना' पत्रिका ने भारत में पहली बार फासीवादी खतरे के विरुद्ध आवाज उठाई थी। यह दावा सत्य न होने पर भी 'आलोचना' ने पुनर्नवता प्राप्त करके आज 'फासीवाद' के विरुद्ध जो आवाज उठाई है, वह स्वागत योग्य है। पत्रिका का पूरा अंक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, गम्भीर और उत्तेजक सामग्री से पूर्ण है। 'फासीवाद' कितने रूपों में प्रकट होकर किसी राष्ट्र या समाज की मानसिकता को प्रदूषित करता है, पत्रिका के प्रस्तुत अंक में इसे पूरी तरह उभारा गया है। सृजन-परिदृश्य के अन्तर्गत प्रकाशित सामग्री ताजी और जड़ता को तोड़ने वाली है। 'छ: सौ साल बाद कबीर' को जिस रूप में याद किया गया है, वह भी पत्रिका की प्रतिरोधात्मक दृष्टि का एक अंग है। सब मिलाकर पत्रिका अपनी परम्परा और गौरव के सर्वथा अनुकूल है। उसकी भास्वरता अप्रतिम है। उसका संकल्प आश्वस्ति प्रदान करने वाला है। सभी दृष्टियों से 'आलोचना' का यह सहस्राब्दी अंक स्वागत योग्य है।

—रामचन्द्र तिवारी

अनेक साहित्यिक आन्दोलनों ने, जिनमें छायावाद से लेकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नई कहानी, अकविता और अकहानी तक के आन्दोलन शामिल हैं, पहले पहल पत्रिकाओं में ही मंच पाया। उनका स्वागत, उन पर प्रहार, उन पर बहस और नोकझोंक आदि सब पत्रिकाओं में ही होते रहे। बहुत सारे नये प्रत्यय, अवधारणाएँ, शैलियाँ आदि पत्रिकाओं के माध्यम से ही पहली बार प्रकाश में आईं और अक्सर संवाद-सहकार या वाद-विवाद के जरिए वहीं स्पष्ट और परिपक्व हुईं।

हिन्दी में इस समय 'शत्रु' और 'मित्र' पत्रिकाओं को मिलाकर दो सौ से अधिक पत्रिकाएँ निकल रही हैं। उनमें आपस में घमासान भी होता रहता है जो साहित्यिक परिवेश को जीवंत और सक्रिय रखता है।

—अशोक वाजपेयी

कृत्रिम बुद्धि

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में, मनुष्य ने हाथों की मेहनत के बजाय दिमाग का प्रयोग करके, तकनीक द्वारा, प्रकृति का दोहन करके ऐश्वर्य अर्जित किया। उत्तरार्द्ध में प्रगति की रफ्तार को संचालित करने वाला उपकरण, मनुष्य के हाथों से छूट गया। वह अपने ही ईजाद किए, तकनीकी चमत्कार के हाथों की कठपुतली बन गया। यह कमाल, 'कृत्रिम बुद्धि' के आविष्कार का था, कि कम्प्यूटर-जनित उपकरण, मीडिया पर इस तरह छाए कि वे, तकनीकी माध्यम न रह कर, उसके संचालक बन गए। नई प्रौद्योगिकी से सूचना और संचार का विस्तार ऐसे हुआ कि बटन दबाने भर से, हर तरह की जानकारी उपलब्ध होने लगी। जानकारी के इस सैलाब से आज का हिन्दी साहित्यकार बहुत आतंकित है। पर क्यों?

—मृदुला गर्ग ('सहित' से साभार)

प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाएँ

कथाक्रम (त्रैमासिक)
सम्पादक : शैलेन्द्र सागर
4 ट्रांजिट हॉस्टल, महानगर, लखनऊ

कथा (अनियतकालीन)
सम्पादक : मार्कण्डेय
ए०डी०-2 एकांकी कुंज, इलाहाबाद-221001

सहित (साहित्य तथा अन्य कलाएँ)
प्रवेशांक जुलाई 2000
सम्पादक : यतीन्द्र मिश्र
प्रकाशक : विमला देवी फाउण्डेशन
अयोध्या

हरसिंगार (त्रैमासिक)
सम्पादक : भगवती प्रसाद देवपुरा
साहित्य मण्डल, श्रीनाथ द्वारा-313301

अभिप्राय (23 अंक प्रकाशित)
सम्पादक : राजेन्द्र कुमार
12/1 बी बंद रोड, एलनगंज, इलाहाबाद

असुविधा (21 वर्षों से प्रकाशित)
सम्पादक : रामनाथ शिवेन्द्र
ग्राम : खड्डई, पो० : पन्नूगंज (सोनभद्र)

रवीन्द्र ज्योति
523/17 आनन्द निवास, गीता कालोनी
जीन्द (हरियाणा)

समरलोक (त्रैमासिक)
समर मेमोरियल ट्रस्ट, ई० 7/832, शाहपुरा
भोपाल

समकालीन सृजन (अनियतकालीन)
सम्पादक : शंभूनाथ
20 बालमुकुन्द मकर रोड
कलकत्ता-700007

प्रिय सम्पादक (अनियतकालीन)
सुलेखन, एल० 5/185 एल, अलीगंज
लखनऊ

कला प्रयोजन (त्रैमासिक)
सम्पादक : हेमन्त शेष
सी० 8 पृथ्वीराज मार्ग, सी स्कीम, जयपुर

अमिधा (त्रैमासिक)
सम्पादक : अशोक गुप्त
राजेन्द्रपुरी, मुजफ्फरपुर

संभवा (त्रैमासिक)
सम्पादक : ध्रुवनारायण गुप्त
मुजफ्फरपुर

विश्वविद्यालय प्रकाशन प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं के विक्रय में रुचि रखता है। ऐसी पत्रिकाओं के प्रकाशक अपने नवीनतम अंक की 5 प्रतियाँ विक्रयार्थ भेजें।

हिन्दी की पत्रिकाएँ

देश की आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ, उसमें पत्रकारिता भी शामिल है। पत्रकारिता के क्षेत्र में सबसे बड़ा परिवर्तन अनियतकालिक पत्रिकाओं का प्रकाशन है। लगभग छठें दशक से ऐसी पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ और आज भी ऐसी पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

इन पत्रिकाओं के साथ ही निजी स्तर पर नियतकालीन पत्रिकाओं के भी प्रकाशन हो रहे हैं। ये पत्रिकाएँ साहित्य की विभिन्न स्वतंत्र विधाओं तथा विचारधाराओं से जुड़ी हैं। ऐसी पत्रिकाओं ने, प्रसाद, पन्त, निराला, फणीश्वरनाथ रेणु, देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रभृति साहित्यकारों पर स्वतंत्र विशेषांक निकालकर हिन्दी साहित्य का भण्डार परिपुष्ट किया है। अभी हाल में 'कहन' पत्रिका का काशीनाथ सिंह पर विशेषांक प्रकाशित किया है। वह उनके रचनात्मक कार्यों पर आधारित विशेषांक है। इतना सब होते हुए, सच यह है कि स्वतंत्र पत्रकारिता की इस सेवा का मूल्यांकन नहीं हुआ है। पाठकों के समक्ष ऐसी कार्य सूची नहीं है कि ऐसी कितनी पत्रिकाओं के प्रकाशन हुए। जब तक उनकी सूची नहीं बन जाती, तब तक इस दिशा में स्वतंत्र रूप से कोई कार्य नहीं किया जा सकता। हम अपने पाठकों के लिए कुछ नयी पत्रिकाओं की जानकारी दे रहे हैं।

सृजन पथ : प्रवेशांक, मार्च, 2000। 180/ए, सेंट्रल कालोनी, पो० भक्तिनगर, सिलीगुड़ी-734425 (पश्चिम बंगाल)।

यह प्रगतिशील और लोक-चेतना की पक्षधर तथा जनचेतना जगाने के संकल्प के साथ पाठकों के समक्ष आयी है। इस अंक में कबीर, नागार्जुन, त्रिलोचन तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर अच्छे लेख छापे गये हैं। साथ ही कविताओं तथा कहानियों के भी संकलन हैं। इसके अतिरिक्त समीक्षात्मक लेख भी प्रकाशित किये गये हैं।

पूर्णकुम्भ : जून 2000। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, आन्ध्र, खरैताबाद, हैदराबाद-4 से प्रकाशित। यह दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की प्रमुख पत्रिका है। इसके मई 2000 के अंक भी प्राप्त हुए हैं। यह पत्रिका गत 22 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। मई वाले अंक में महाकवि पंत पर विशेष सामग्री प्रस्तुत की गई है। इसे पन्त विशेषांक की संज्ञा दी जा सकती है। इस पत्रिका के दोनों अंकों में पर्याप्त साहित्यिक पाठ्य सामग्री है। जुलाई 2000 अंक डॉ० रामविलास शर्मा की स्मृति में प्रकाशित श्रद्धांजलि अंक है जिसमें दक्षिण के अनेक विद्वानों के लेख हैं।

सनद-5। यह अनियतकालीन पत्रिका है। यह मंजू मल्लिक मनु इस पत्रिका की संपादक हैं। पटना के खगौल से प्रकाशित होती है। प्रस्तुत अंक में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर सामग्री प्रस्तुत की गयी है। उर्दू के प्रख्यात शायर अली सरदार जाफरी पर प्रस्तुत बातचीत पठनीय है। इस छोटी-सी पत्रिका में अनेक प्रकार की पठनीय सामग्री प्रस्तुत की गयी है जिससे पाठकों का मनोरंजन और ज्ञानवर्धन होता है।

प्रतीक संवेदना : काशी से श्री विमल तिवारी के सम्पादकत्व में प्रस्तुत अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'प्रतीक संवेदना' का यह दूसरा अंक (जनवरी-जून 2000) हमारे सामने है। काशी हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की जन्मभूमि है। यहाँ से बहुत दिनों से पत्रिका प्रकाशन के क्षेत्र में सन्नाटा की स्थिति रही है, वह अब समाप्त हो रही है।

प्रस्तुत अंक में लेख, साक्षात्कार, संस्मरण, नयी प्रतिभाएँ, स्मृति शेष कविताएँ, कहानियाँ, रपट, पुस्तक-समीक्षा तथा सिनेमा आदि सभी विषयों संतुलित सामग्री प्रस्तुत की गयी है। प्रतीक संवेदना में उच्चस्तरीय तथा पठनीय सामग्री है। कुल मिलाकर पठनीय पत्रिका के रूप में सामने आ रही है।

रंगायन : अक्टूबर 99 से मार्च 2000। यह जयपुर के भारतीय लोककला मण्डल की लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिका है, जो विगत 33 वर्षों से प्रकाशित हो रही है और लोककला और साहित्य के प्रचार-प्रसार में इसका महत्वपूर्ण योगदान किया है। प्रस्तुत अंक में लोक साहित्य पर पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की गयी है। विभिन्न प्रदेशों के लोकगीतों के बारे में अनेक लेख हैं। जिससे भारतीय सांस्कृतिक चेतना का बोध होता है।

इस पत्रिका में सुर और लय का आध्यात्मिक लेख में प्रख्यात ठुमरी गायिका गिरिजा देवी का साक्षात्कार प्रकाशित हुआ है। इस लेख में काशी की गायिकी घराने की विशेषताओं पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला गया है। भारतीय सांस्कृतिक चेतना की जानकारी देने वाली यह सम्पूर्ण पत्रिका है।

पल-प्रतिपल : सितम्बर-दिसम्बर 99 अंक यह त्रैमासिक पत्रिका है और विगत 14 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका हरियाणा के पंचकूला से प्रकाशित होती है। 'पल-प्रतिपल' का यह विशेषांक पंजाबी साहित्यकार कालजयी रचनाकार गुरदयाल सिंह पर केन्द्रित है। वे उपन्यासकार, कहानी, लेखक, नाटककार और बाल साहित्य के लेखक हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उन्हें उत्तम कृतियों के लिए पद्मश्री सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्रदान किया है। ऐसे कालजयी साहित्यकार पर 'प्रतिपल' का अंक केन्द्रित होना हिन्दी जगत के लिए प्रसन्नता की बात है। इस अंक में कथाकार गुरदयाल सिंह के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। अंक पठनीय और संग्रह करने योग्य है।

पहल : हिन्दी की प्रख्यात मार्क्सवादी पत्रिका 'पहल' का 64 और 65वाँ अंक हमारे समक्ष है। प्रख्यात प्रगतिशील लेखक ज्ञानरंजन के सम्पादकत्व में प्रकाशित इस पत्रिका ने हिन्दी पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। प्रस्तुत अंक मार्क्सवादी आलोचना पर केन्द्रित है। मार्क्सवादी समीक्षा पर इसमें अनेक समीक्षात्मक लेख, उसके विकास और उसके पुनर्मूल्यांकन पर लेखों का संग्रह कर इस अंक को विशेष रूप से पठनीय बना दिया है। इस अंक के माध्यम से पाठकों को मार्क्सवादी समीक्षा पर लगभग पूरी जानकारी मिल जाती है। पहल पत्रिका का यह अंक संग्रहणीय है।

इंटरनेट की मदद से पूरे विश्व में अँग्रेजी का प्रभुत्व बढ़ रहा है। अँग्रेजी के तेजी से बढ़ रहे साम्राज्यवाद भी समस्या से न केवल भारतीय बल्कि कई यूरोपीय भाषाएँ भी आक्रांत हैं। हमारे समाज में भी पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण बढ़ रहा है। आज का साहित्यकार अपने को आम जन से ऊपर मानकर लिख रहा है। **—विष्णुकान्त शास्त्री**

राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

❑ ❑

भारतीय भाषाओं का संकट मूलतः संस्कृति का संकट है। भारतीय समाज में सांस्कृतिक चेतना समाप्त हो रही है। भारतीय समाज में तेजी से बढ़ रहा मध्यम वर्ग भारतीय भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए हर भारतीय भाषा को अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी।

—डॉ० नामवर सिंह

❑ ❑

आज भारतीय भाषाओं के बीच की दूरियाँ पाटना आवश्यक है। अन्य भाषाओं के ज्ञान और अनुवाद से इस लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है।

—महापात्र नीलमणि साहू (उड़ीसा)

❑ ❑

नय राज्य या जो भी अन्य राज्य बनेंगे वे हिन्दी को नकारने के उत्साह में अँग्रेजी का दासत्व स्वीकार करेंगे या अपनी स्थानीय अस्मिताओं के विकास का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे? इसी तरह विकास की उनकी कल्पना दिल्ली की औपनिवेशिक पद्धति, केन्द्रीयकरण, अंधे उद्योगीकरण, पर्यावरण की पूरी उपेक्षा और बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश के अनुरूप होगी या वे छत्तीसगढ़, मुक्ति, झारखण्ड मुक्ति इत्यादि की उसंगों की पूर्ति की ओर बढ़ेंगे? **—सुरेन्द्र मोहन**

❑ ❑

"अब तो मैं रोता भी हिन्दी में हूँ। हिन्दी में मैं लड़ और झगड़ भी सकता हूँ। यहाँ तक कि सपने भी मैं अब हिन्दी में देखने लगा हूँ।"

—मोहन राजुलू (तमिल समाज सेवी)

लमही में प्रेमचंद स्मारक

राज्यसभा में शून्यकाल के दौरान सदस्य सरला माहेश्वरी तथा चंद्रकला पांडे ने लमही में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्मारक बनाने की माँग की। आज जब मानवीय मूल्यों में लगातार गिरावट आ रही है प्रेमचंद की लेखनी और शिक्षण उत्प्रेरक की तरह काम कर सकते हैं। स्मारक द्वारा साहित्यिक शोध को विशिष्ट पहचान मिल सकेगी।

सम्मान-पुरस्कार

भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार

30 जून को राष्ट्रपति के०आर० नारायणन ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में हिन्दी, ओड़िया, मराठी, मलयालम, तेलुगू और पंजाबी के लेखकों को वर्ष 1999 और वर्ष 2000 के लिए भारतीय भाषा परिषद के पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्होंने वर्ष '99 के लिए मराठी के वयोवृद्ध लेखक **विदा करन्दीकर** को सहयाद्रि पुरस्कार, मलयालम की विदुषी लेखिका **डॉ० एम० लीलावती** को संवत्सर पुरस्कार, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार **गिरिजार किशोर** को शतदल पुरस्कार तथा ओडिया के जाने-माने लेखक महापात्र **नीलमणि साहू** को कोर्णाक पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 2000 के लिए सम्मानित रचनाकारों में हिन्दी की प्रख्यात लेखिका **श्रीमती कृष्णा सोबती**, शतदल पुरस्कार, तेलुगु की प्रसिद्ध लेखिका **श्रीमती वासि रेड्डी सीता देवी**, **ऋतंभरा** तथा पंजाबी के चर्चित कवि **सुरजीत पातर** पंचनद पुरस्कार शामिल है। असमिया के मशहूर कवि **नीलमणि फुकन** पुरस्कार ग्रहण करने नहीं आए। पुरस्कार में 51 हजार रुपये की राशि, एक प्रशस्ति पत्र तथा शाल है। समारोह में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने राष्ट्रपति श्री नारायणन को भारतीय भाषा परिषद की ओर से एक प्रतीक चिन्ह भेंट किया। श्री शास्त्री परिषद के पूर्व मंत्री भी रह चुके हैं।

समारोह में सम्मानित लेखिका श्रीमती कृष्णा सोबती ने पुरस्कृत लेखकों की तरफ से एक वक्तव्य भी पढ़ा जिसमें उन्होंने देश की विशेषकर महिलाओं और गरीब बच्चों की हालत का जिक्र करते हुए समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार पर कड़ी टिप्पणी की। उन्होंने देश में राजनीति के पतन पर भी गहरी पीड़ा व्यक्त की और लेखकीय स्वतंत्रता को हर हालत में बनाए रखने की अपील की। समारोह का संचालन परिषद के निदेशक प्रभाकर श्रोत्रिय ने और प्रशस्ति पाठ परिषद की मंत्री कुसुम खेमानी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन परिषद के अध्यक्ष पवित्र सरकार ने किया।

सोलह युवा प्रकाशक सम्मानित

सोलह युवा प्रकाशकों को 29 जून को दिल्ली में **एक समारोह में** सम्मानित किया गया। **इनमें दो महिला प्रकाशक हैं।** फेडरेशन ने उन 16 युवा प्रकाशकों को पहली बार सम्मानित किया जिन्होंने प्रकाशन का पुश्तैनी व्यवसाय अपनाया है। नई पीढ़ी प्रकाशन व्यवसाय की जटिलता और असुरक्षा के कारण इस व्यवसाय में नहीं आना चाहती। गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने युवा प्रकाशकों—सर्वश्री **अशोक गोसाईं** (हरआनंद पब्लिकेशंस), **सुश्री भवानी मित्रा** (नया प्रकाश), **हर्ष भटकल** (पापुलर प्रकाशन), **मनीष अग्रवाल** (पीताम्बर पब्लिशिंग), **मनीष वर्मा** (डायमण्ड मैग्जींस), **नवीन गुप्ता** (आर्य पब्लिशिंग हाउस), **नवल गुप्ता** (विवेक प्रकाशन), **नीरज गोविल** (फ्रैंक ब्रदर्स), **पीयूष चावला** (विकास पब्लिशिंग), **प्रभातकुमार** (प्रभात प्रकाशन), **सुश्री सुष्मिता घोष** (प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया), **रवि डीसी** (डी सी बुक्स), **एस मेहरा** (नरोसा पब्लिशिंग हाउस), **विजय प्रिमलानी** (आक्सफोर्ड एण्ड आई बी एच पब्लिशिंग कम्पनी), **विकास घई** (स्टर्लिंग पब्लिशर्स) तथा **विवेक रस्तोगी** (रस्तोगी पब्लिकेशंस) को सम्मान प्रदान किया।

शताब्दी पंजाबी कवि सम्मान

पंजाबी की प्रमुख कवियित्री एवं लेखिका **अमृता प्रीतम** को 11 जुलाई को दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने पंजाबी अकादमी, दिल्ली की ओर से 'शताब्दी पंजाबी कवि सम्मान' प्रदान किया। सम्मान स्वरूप 11 लख रुपये, स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र तथा शाल भेंट किया गया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार

1994 से 1999 तक के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अरुण जेटली ने 28 जून, 2000 को प्रदान किये।

डॉ० मनोहर प्रभाकर, पत्रकारी लेखन के आयाम[1]; **राजेन्द्र राही,** समाचार पत्र संपादन और प्रकाशन[2]; **डॉ० अमर बहादुर सिंह,** हिन्दी पत्रकारिता और मदनमोहन मालवीय[3]; **श्यामसुन्दर शर्मा,** हिन्दी प्रकाशन का इतिहास[1]; **रत्नेश्वरकुमार सिंह,** समाचार : एक दृष्टि[2]; **डॉ० दयानन्द,** आर्थिक पत्रकारिता[3]; **कृष्णकुमार रतु,** संचार क्रान्ति और बदलता सामाजिक सौंदर्य बोध[4]; **बृजमोहन गुप्त,** मनोरंजन और कला[4]; **एम०सी० शर्मा,** डेस्क टॉप पब्लिशिंग ऑन पी०सी०[4]; **कृष्णकुमार भार्गव,** विश्व उच्चारण कोश[1]; **डॉ० हरिमोहन,** रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता[2]; **कृष्णचन्द्र बेरी,** पुस्तक प्रकाशन : संदर्भ और दृष्टि[3]; **काशीनाथ जोगलेकर,** समाचार और संवाददाता[4]; **हरमल सिंह,** फिल्में कैसे बनती हैं ?[1]; **राजकिशोर,** हिन्दी पत्रकारिता—प्रश्न परिप्रेक्ष्य[2]; **शान्तिप्रसाद अग्रवाल,** भारत में दूरदर्शन[3]; **डॉ० गुलाब कोठारी,** फोटो पत्रकारिता[4]; **श्रीमती सुजाता राय,** राष्ट्रीय जागर और हिन्दी पत्रकारिता का आदिकाल[4]।

1. प्रथम पुरस्कार राशि 35,000, 2. द्वितीय 25,000, 3. तृतीय 20,000, 4. सांत्वना पुरस्कार 5,000।

डॉ० सद्युम्न आचार्य पुरस्कृत

हिन्दी संस्कृत अकादमी द्वारा आलोचनात्मक मौलिक लेखन के लिये इस वर्ष का अखिल भारतीय मौलिक साहित्य रचना पुरस्कार **डॉ० सद्युम्न आचार्य** को प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनकी मौलिक कृति 'भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान' के लिये था। डॉ० आचार्य मु०म० टाउन पी०जी० कालेज, बलिया में संस्कृत विभाग में रीडर हैं तथा उनके मौलिक तथा सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान उपन्यास 'आवां' के लिए

नई सहस्राब्दि का पहला इंदु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान हिन्दी की बहुचर्चित कथाकार **चित्रा मुद्गल** को उनके उपन्यास 'आवां' पर 27 सितम्बर को लन्दन के नेहरू सेन्टर में प्रदान किया गया। इंग्लैण्ड में बसे दक्षिण एशियाई लेखकों की संस्था 'कथा' की ओर से उन्हें यह सम्मान सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित उपन्यास 'आवां' पर दिया गया।

पं० रमादत्त शुक्ल का अभिनन्दन

हिन्दी की ऐतिहासिक पत्रिका 'सरस्वती' से गहनरूप से जुड़े रहे, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, तेलुगू आदि भाषाओं के ज्ञाता एवं अनुवाद-कला के सिद्धहस्त साहित्यकार ब्रह्मर्षि स्व० पं० ठाकुरदत्त मिश्र जी की 99वीं जयन्ती के अवसर पर प्रयाग स्थित हिन्दुस्तानी अकादमी के सभागार में आयोजित समारोह में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। समारोह में 75 वर्षीय वरिष्ठ साहित्यकार एवं 'चण्डी' व 'सम्पादक की वाणी' मासिक पत्रिकाओं के सम्पादक **पं० रमादत्त शुक्ल** का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

समारोह के अध्यक्ष श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, विधानसभा अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि डॉ० नरेन्द्रकुमार गौर, गन्ना विकास मंत्री ने श्री शुक्ल को माला, अंगवस्त्र, नारिकेल एवं प्रशस्ति-पत्र समर्पित कर अभिनन्दन किया।

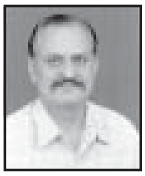

सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं बालकथा लेखक **गोविन्द शर्मा** को प्रकाशन विभाग, भारत सरकार द्वारा 1999 का बाल साहित्य वर्ग में प्रथम 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार' इनकी पाण्डुलिपि 'कालू कव्वा एवं अन्य कहानियाँ' पर दिया गया है।

> हमारे रचनाकार आज रचना से ज्यादा पुरस्कारों की चर्चा में जुटे हैं। रचना महत्त्वपूर्ण नहीं हो पा रही है, बल्कि रचनाकार महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। हर छोटे कस्बे में साहित्य सम्बन्धी पुरस्कार दिये जा रहे हैं। जितने तिकड़म और पैसे लगाकर हम पुरस्कार दे रहे हैं उतने ही पैसे में हम एक पत्रिका निकाल सकते हैं, जो पाठकों को बढ़ाने में सहायक होगी।
>
> **इन्द्रमणि उपाध्याय,** वरिष्ठ कहानीकार

मगही साहित्यकार सम्मानित

मगही साहित्यकार **डॉ० योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश'** को डॉ० कर्ण सिंह ने डॉ० शंकरदयाल सिंह लोकभाषा सम्मान से सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप 11 हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र तथा शाल भेंट किया।

पाकिस्तानी लेखक संघ का सहस्त्राब्दि कवि सम्मान

प्रख्यात पंजाबी लेखिका **अमृता प्रीतम** पाकिस्तान के पंजाबी लेखक संघ ने 'सहस्राब्दी कवि सम्मान' देने और उन्हें वारिस शाह की वारिस खिताब से विभूषित करने की घोषणा की है।

पाकिस्तान की मशहूर लेखिका अफजल तौसीफ अमृता प्रीतम की ओर से यह सम्मान ग्रहण करेंगी।

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार

साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में उड़िया साहित्यकार रमाकांत रथ तथा वरिष्ठ लेखक विजयदान देथा ने भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए 18 लेखकों को प्रशस्ति पत्र तथा दस-दस हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये गये।

बंगला भाषा में गिरीश कर्नाड कृत कन्नड नाटक तले दंड को अनुवाद करने के लिए **शेख घोष**, सीताकांत महापात्र के कविता संकलन शब्दर आकाश का डोगरी अनुवाद अक्खर गास के लिए **पद्मा सचदेव**, और **प्रयाग शुक्ल** को बंकिमचंद चट्टोपाध्याय कृत बंकिमचंद्रेर निर्वाचित प्रबन्ध संग्रह का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए पुरस्कार दिया गया।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत अन्य भारतीय भाषा के लेखकों में **निरुपमा फूकन** (असमिया), **गीता कृष्णन कुट्टी** (अंग्रेजी), **सुकन्या झवेरी** (गुजराती), **वामन दत्तात्रेय बेंद्रे** (कन्नड), **मुरारी मधुसूदन ठाकुर** (मंथिली), **शत्रुघ्न** (मलयालम), **स्व० अरिबम राधामोहन शर्मा** (मणिपुर), **हेमा लक्ष्मण जावडेकर** (मराठी), **बलदेव सिंह बद्दन** (पंजाबी), **बलदेव बखतराई मतलानी** (सिन्धी), **तमिष नाडन** (तमिल), **वेमराज भानु मूर्ति** (तेलुगू) तथा **हैदर जाफरी** शामिल हैं।

दलित पुरस्कार

मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1998 के लिए **डॉ० श्यौराज सिंह 'बेचैन'** (दिल्ली) को उनकी कृति 'हिन्दी दलित पत्रकारिता पर अम्बेडकर का प्रभाव' के लिए 15 हजार का पहला पुरस्कार **डॉ० एम०एल० वर्मा 'निकुंज'** (बड़वानी) को उनकी कृति 'सतपुड़ा के आँसू' और **डॉ० अरुणा लोखंडे** (औरंगाबाद) को 'समकालीन कथा साहित्य में जनचेतना' के लिए संयुक्त रूप से दिया गया।

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार

इस वर्ष का भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार युवा कवि **गिरिराज किराडू** को दिया गया है। श्री किराडू को यह पुरस्कार 'बहुवचन' के प्रवेशांक में प्रकाशित उनकी कविता 'मेज इतनी पुरानी थी कि उसका कोई वर्तमान नहीं था' के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार वर्ष के दौरान प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ कविता के लिए प्रति वर्ष 35 वर्ष से कम उम्र के कवि को दिया जाता है।

साठ बच्चे पुरस्कृत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०आर०टी०) ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के 60 बच्चों को 1998-99 के लिए राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया।

कश्मीरी कवि को साहित्य अकादमी फेलोशिप

कश्मीरी के प्रख्यात कवि एवं आलोचक **रहमान राही** को साहित्य अकादमी की मानद फैलोशिप से सम्मानित किया गया। अकादमी के अध्यक्ष रमाकांत रथ ने श्रीनगर 75 वर्षीय राही को कश्मीरी भाषा एवं साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया। अकादमी के इस सर्वोच्च सम्मान से विगत वर्षों में डॉ० रामविलास शर्मा, नागार्जुन, विद्यानिवास मिश्र और कृष्णा सोबती जैसे लेखकों को सम्मानित किया जा चुका है।

साहित्य सम्मेलन पुरस्कार

उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष **केशरीनाथ त्रिपाठी** को आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान और पद्मश्री **डॉक्टर कन्हैयालाल नन्दन** को इस साल के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान प्रदान किया गया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सम्मान स्वरूप विभूतियों को अंगवस्त्र और ताम्रपत्र प्रदान किया। **श्रीलाल शुक्ल** को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्मान, **डॉक्टर एन० चन्द्रशेखरन** को मदनमोहन मालवीय सम्मान, पद्मश्री **गोपालदास नीरज** को सुमित्रानन्दन सम्मान, **डॉक्टर आरिफ नजीर** को अब्दुल रहीम खानखाना सम्मान, न्यायमूर्ति **रामभूषण मेहरोत्रा** को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन सम्मान, **डॉक्टर गिरजाशंकर त्रिवेदी** को पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी सम्मान, **विनय छजलानी** को चिन्तामणि घोष सम्मान, **डॉक्टर पिंपलापुरी** को श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान, **श्री शम्भूनाथ पाण्डेय** को बेचन शर्मा उग्र सम्मान, **डॉक्टर उपेन्दबहादुर सिंह** को गयाप्रसाद शुक्ल सनेही सम्मान, **आचार्य सोहनलाल रामरंग** को सेठ गोविन्ददास सम्मान, **डॉक्टर लक्ष्मीशंकर मिश्र निशंक** को पद्म विभूषण पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी सम्मान, **डॉक्टर जयकृष्णप्रसाद खंडेलवाल** को पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी सम्मान, **त्रिलोचन सिंह** को डॉक्टर रामविलास शर्मा सम्मान, **रमेशचन्द्र** को डॉक्टर प्रतापनारायण टण्डन सम्मान और **डॉक्टर अरविन्द कुमार** को डॉक्टर हरदेव बाहरी (मरणोपरान्त) सम्मान प्रदान किया गया।

पण्डित ब्रह्मदत्त दीक्षित, कैलाशभूषण जिन्दल, श्रीमती डॉक्टर सुमन यादव, दीन मोहम्मद, विनयकुमार दूबे और **डॉक्टर राजेन्द्र अवस्थी** को हिन्दी सेवी विशेष सम्मान से विभूषित किया गया। रायबरेली में 30 सितम्बर और एक अक्टूबर को सारस्वत सम्मान सम्मेलन में सभी विभूतियों को सम्मानित किया गया।

किसी देश में भाषा का प्रश्न केवल लिपि, अक्षर या शब्दों का प्रश्न नहीं है। यह उस देश की पूरी नियति, उसकी प्रगति एवं संस्कृति से जुड़ता है। यह अकारण नहीं है कि किसी देश को गुलाम बनाने की प्रक्रिया में एवं उसके बाद साम्राज्यवादी देश अपनी भाषा थोपते रहे हैं और साथ ही गुलाम बने देशों की भाषाओं को नष्ट करने की कोशिश करते रहे हैं। इसकी वजह यह है कि अपनी बोलियों-भाषाओं में किसी देश की वास्तविक पहचान छिपी होती है; उनके शब्दों, उनकी ध्वनियों में उस देश का हृदय धड़कता है। इसलिए, अगर कोई देश गुलामी की जंजीर तोड़कर आजाद होता है तो अन्य चीजों के अलावा उसे अपनी राष्ट्रीय भाषाओं को पुनर्प्रतिष्ठित करना उसके स्वतंत्र एवं संप्रभु अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

—रामसुजान अमर

❑ ❑

उर्दू का आधार देवनागरी लिपि

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित 'अंदाज अपना-अपना' के लोकार्पण समारोह में उर्दू आलोचक डॉ० गोपीचंद नारंग ने कहा कि देवनागरी लिपि ने उर्दू को व्यापक आधार दिया है। उर्दू शायरी की लोकप्रियता को शिखर पर पहुँचाने का काम देवनागरी ने किया है। डॉ० कर्णसिंह के अनुसार गज़ल हिन्दी की गंगा, उर्दू की यमुना और फारसी की अदृश्य सरस्वती का संगम है।

भारतीय भाषा दिवस

अच्छा हो कि हम हिन्दी दिवस का विस्तार करके उसमें अन्य संविधान सम्मत भारतीय भाषाओं को भी शामिल कर लें और इसके लिए यदि आवश्यक हो तो उसका 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में नामांतर कर दिया जाय। इस तरह यह केवल भाषाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे भारतीय-साहित्य के लिए एक राष्ट्रीय त्योहार का दिवस बन सकेगा।

—केदारनाथ सिंह

कविता छंदों की ओर नहीं लौटी तो खत्म हो जायेगी।

—कैलाश वाजपेयी

हमारी विरासत

अपनी संस्कृति, अपने साहित्य पर सबको गौरव का अनुभव होता है। लेकिन गौरवशाली साहित्यकारों, संगीतकारों की स्मृति से जुड़े ऐतिहासिक स्थानों की बेहद उपेक्षा होती है। पिछले दिनों संवेदनशील सांसद और विधिवेत्ता डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण पर एक जीवन्त संवाद का आयोजन कर एक नये अभियान की शुरुआत की है। डॉ० सिंघवी ने भारतीय उच्चायुक्त के रूप में कुछ वर्ष पहले ब्रिटेन में शेक्सपियर के गाँव स्टार्टफार्ट में कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा लगवा दी। लेकिन अपने भारत में राँची के टैगोर हिल के संरक्षण के अभियान में नौकरशाही की रुकावटों और मंत्रियों की बेबसी पर वह ठगे-से महसूस करते हैं। बताया जाता है कि टैगोर हिल पर बैठकर कविवर रवीन्द्रनाथ ने 'गीतांजलि' के अंश भी लिखे थे। यह स्थान अब उजड़ा हुआ है। असामाजिक तत्त्वों द्वारा इस क्षेत्र पर कब्जा करने के आरोप हैं।

दिल्ली के दो युवकों पी० नारायणन और चन्द्रकान्त झा ने टैगोर हिल की मुक्ति के लिए विधिवेत्ताओं, सांसदों, लेखकों, पत्रकारों का ध्यान आकर्षित किया। वही प्रयास अब रंग ला रहे हैं।

टैगोर अकेले नहीं हैं। प्रेमचन्द का गाँव लमही, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का गाँव दौलतपुर, निरालाजी का गढ़ाकोला उपेक्षित हाल में हैं।

'दक्खिनी हिन्दी' हिन्दी का वह रूप है, जिसका विकास 14वीं से 19वीं सदी तक बहमनी, कुतुबशाही और आदिलशाही सुलतानों के संरक्षण में हुआ था। सत्रहवीं सदी में तंजावुर पर राज करने वाले शाहजी महाराज ने हिन्दी भाषा में दो यक्ष गानों की रचना की थी। श्री शिवन्न शास्त्री ने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान किया। अल्लूरी, सत्यनारायण राजु ने 1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जेल में रहकर हिन्दी सीखी तथा राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास 'वोल्गा से गंगा' का तेलुगु में हिन्दी अनुवाद किया। केरल के महाराजा स्वाति तिरुनाल ने ब्रजभाषा में अनेक गीत लिखे। राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्यम भारती ने हिन्दी को विशेष महत्त्व देते हुए उसकी पढ़ाई के लिए विशेष कक्षाएँ संचालित कीं। दूसरी तरफ, जंगबंधु हरिचन्दन, रामदास तथा प्रह्लाद राय जैसे उड़िया कवियों ने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं। इसलिये दक्षिण भारत के साथ उत्तर भारत में ऐसे महान लेखकों की स्मृति के केन्द्र क्यों नहीं बनने चाहिये। प्रवासी भारतीयों के मन में भारतीय धर्म और संस्कृति के लिए गहरा लगाव रहता है। उनका सहयोग लेकर भारतीय साहित्यकारों की विदेश-यात्राओं के विवरण इकट्ठे कर देश-विदेश में प्रेरक स्मृति-केन्द्र स्थापित हो सकते हैं। सांस्कृतिक एकता राजनीतिज्ञों के भाषणों और नारों से कभी नहीं स्थापित हो सकती है। समाज के हर वर्ग को साहित्य तथा संस्कृति से जोड़ा जाना आवश्यक है।

कालिदास समारोह केवल उज्जयिनी तक क्यों सीमित रहता है? कालिदास तो भारत के चप्पे-चप्पे में घूमते रहे। हर क्षेत्र में कालिदास स्मृति मन्दिर क्यों नहीं बन सकते? मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, निराला, पन्त, प्रसाद, पराड़कर और महादेवी वर्मा की स्मृति में उत्तर भारत के हर प्रमुख नगर में अच्छे सांस्कृतिक केन्द्र क्यों नहीं स्थापित हो सकते हैं?

—आलोक मेहता

पुस्तक मानसिकता

देश में व्यापक रूप से पुस्तक मानसिकता उत्पन्न करने के लिए केन्द्र तथा राज्यों के शिक्षा-संस्कृति मंत्रालयों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कुछ कदम उठाये जाने चाहिए। उदाहरण के लिए—

(1) किसी भी नयी कालोनी या बस्ती में स्कूल, पार्क, मन्दिर, गुरुद्वारा आदि के साथ ही सार्वजनिक पुस्तकालय के लिए भी स्थान निर्धारित किया जाना चाहिए। आवश्यक हो तो हर घर से 'हाउस टैक्स' के साथ पुस्तकालय टैक्स की थोड़ी सी राशि भी वसूल की जाए। इससे पुस्तकालय आन्दोलन को बढ़ावा मिलेगा और बस्ती के लोगों में पुस्तकों को पढ़ने की रुचि बढ़ेगी।

(2) हर बाजार में कुछ दुकानें भारतीय भाषाओं की पुस्तकों को बेचने के लिए निर्धारित की जानी चाहिए। ऐसी दुकानों का किराया नाममात्र का ही रखा जाए और जो इस प्रकार की दुकान का संचालन करे उसकी सब प्रकार से सहायता की जाए।

(3) दूरदराज के क्षेत्रों में जो उद्यमी चलती-फिरती पुस्तकों की दुकान ले जाकर पुस्तक बेचने का धंधा करना चाहते हैं, वाहन खरीदने और पुस्तकें प्राप्त करने की दृष्टि से उनकी सहायता की जानी चाहिए। इस कार्य में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

(4) पुस्तक-व्यवसाय को उद्योग की मान्यता मिलनी चाहिए और प्रकाशकों को बैंक से ऋण प्राप्त करने में वही सुविधाएँ मिलनी चाहिए जो अन्य उद्योगों के लिए प्राप्त हैं।

(5) पुस्तकों को डाक से भेजने की रजिस्ट्री दर पाँच रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(6) जो लेखक सहकारी प्रकाशन बनाकर अपनी पुस्तकें प्रकाशित करने का उद्यम करें उन्हें सस्ती दर पर कागज उपलब्ध कराया जाए। सहकारी आधार पर प्रकाशित पुस्तकों को सरकारी खरीद में भी प्राथमिकता दी जाए। इससे लेखकों में सहकारी भावना का विकास होगा और सिद्धांतहीन प्रकाशकों की गतिविधियों को नियंत्रित किया जा सकेगा।

(7) जहाँ तक हो सके सरकारी संस्थान स्वयं प्रकाशन कार्य न करें। इन्हें अपना अधिक ध्यान सही पुस्तक मानसिकता के निर्माण में लगाना चाहिए। जिन पुस्तकों/अनुवादों का प्रकाशन सरकार आवश्यक समझती है उनका प्रकाशन, कुछ अनुदान या पुस्तकें खरीदकर निजी क्षेत्र के प्रकाशकों से कराया जाए।

(8) दृश्य एवं प्रचार निदेशालय (डी०ए०वी० पी०) द्वारा लोकहित में जनजीवन को शिक्षित करने की दृष्टि से पत्र-पत्रिकाओं को विज्ञापन दिये जाते हैं। अच्छी पुस्तकों को पढ़ने, जन्मदिन, विवाह अथवा ऐसे ही अवसरों पर अपने स्वजनों को अच्छी पुस्तकें भेंट करने का प्रचार उसी स्तर पर किया जाना चाहिए जिस स्तर पर परिवार नियोजन के कार्यक्रम का किया जाता है।

(9) देश के विभिन्न भागों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ और पुस्तक मेलों के आयोजनों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(10) समय-समय पर, विशेष रूप से त्योहारों और मेलों के अवसर पर पुस्तक बाजार लगाए जा सकें ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। ऐसे बाजारों में पिछले वर्षों में प्रकाशित ऐसी पुस्तकों को बेचा जा सकता है, जो प्रकाशकों के पास बची पड़ी हैं। नई प्रकाशित पुस्तकों की अपेक्षा इनका मूल्य भी बहुत कम होता है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया ने पठन-पाठन की रुचि को बहुत हानि पहुँचाई है अत: इसका प्रभावी ढंग से मुकाबला करने की आवश्यकता है।

—महीप सिंह

आज के राजनीतिज्ञ

आज तो गुण्डे, बदमाश, माफिया, भ्रष्ट, चोर लोगों का राजनीति पर कब्जा हो गया है। उनके सामने न तो देश है और न ही नागरिक। आज के नेता भले ही जनता के प्रतिनिधि हैं मगर जनता से ही दूर हैं। पहले ऐसी हालत नहीं थी। जवाहरलाल नेहरू मित्र होने के नाते अपनी आलोचना सुनने का साहस रखते थे। प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी से तो मेरे इतने मधुर सम्बन्ध थे कि 'राष्ट्रपति भवन' मेरा दूसरा घर था। पहले नैतिकता का जमाना था, आज तो नैतिकता किताबों और भाषणों का चीज बन गया है।

88 वर्षीय साहित्यकार

—विष्णु प्रभाकर

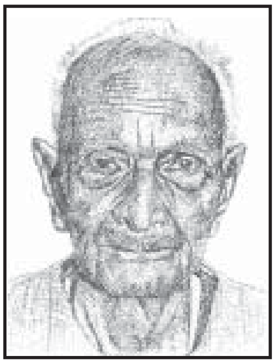

केन का किनारा सूना हो गया

यह बाँदा है,
और यहाँ पर रहता हूँ
जीवन यापन कठिनाई से ही करता हूँ
शायद ही आता है कोई मित्र यहाँ पर
शायद ही आती है मेरे पास चिट्ठियाँ
इसीलिए रहता उदास हूँ खोया-खोया...

गत 23 जून, 2000 को प्रगतिशील चेतना के वरिष्ठ कवि, बाँदा की धरती के रूप, रस, गंध, स्पर्श के अन्यतम कवि, श्रम-सौन्दर्य के अप्रतिम कवि और डॉ० रामविलास शर्मा के अभिन्न मित्र कवि **केदारनाथ अग्रवाल** ने अपने प्राण त्याग दिए। अब वे यहाँ रहकर करते भी क्या? अपने 'प्रिय डॉक्टर' के चले जाने के बाद उनके लिए अब यहाँ रहने की सार्थकता ही क्या थी?

गुमसुम

केन किनारे/पल्थी मारे/पत्थर बैठा गुमसुम!
सूरज पत्थर/सेंक रहा है गुमसुम!
साँप हवा में/झूम रहा है गुमसुम!
पानी पत्थर/चाट रहा है गुमसुम!
सहमा राही/ताक रहा है गुमसुम!

मुझे बार-बार लगता है कि कवि केदारनाथ अग्रवाल को हिन्दी जगत् ने वह मान-सम्मान नहीं दिया जो उन्हें दिया जाना चाहिए था। जब शमशेर ने उनके प्रतिनिधि काव्य-संकलन 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' की समीक्षा 'आलोचना' पत्रिका में की थी, तो उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था—

''आलोचना का विशेषांक मिला। 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' पर लिखकर तुमने अपना विचार व्यक्त किया। यही इस बात का द्योतक है कि साजिश है कि मेरे दोस्त को ही सबसे आगे जाकर मेरे बारे में कहना पड़ा। क्या खूब है हिन्दी के हिमायती आलोचक कि मुँह में ताला डालकर बैठे हैं और साजिशी बेईमानी से मुझे और मेरी कविता को मार डालना चाहते हैं, लेकिन मैं मरने का नहीं। सबके सिर पर चढ़कर बैठा हूँ, और हमेशा रहूँगा।''

कवि केदार की इसी भाव को व्यक्त करने वाली एक कविता है—

मैं नहीं लचा
कंटक जो आए हैं पाँव तले।
मैंने वे बार-बार बिल्कुल कुचले॥
कोई भी एक नहीं घात से बचा।
संकट सब सबल लचे, मैं नहीं लचा॥
सामने पहाड़ मिले रोकते खड़े॥
हो गए निहार उन्हें रोंगटे खड़े॥
मैंने भी मल्ल युद्ध मेरु से लड़े।
जीता मैं हार गए वे बड़े-बड़े॥
मेघ ने, निदाघ ने मुझे नहीं तजा।
कान के समीप मृत्यु ढोल भी बजा॥
किन्तु मैं निदाघ, मेघ, मृत्यु से कढ़ा।
नाचता हुआ प्रसून-पंथ में बढ़ा॥

लगता है, आज भी वे मरे नहीं हैं। जब तक केन की जलधारा लहराती रहेगी। जब तक बाँदा की धरती पर फागुनी हवा फाग गाती रहेगी। जब तक हरा ठिगना चना शीश पर छोटे गुलाबी फूल का मुरेठा बाँधे सजकर खड़ा रहेगा। जब तक हठीली अलसी सिर पर नीले फूल सजाकर हृदय का दान देने के लिए उत्सुक खड़ी रहेगी। जब तक धूप चाँदी की साड़ी पहने चमकती रहेगी। तब तक यह धरती पुत्र गुनगुनाता हुआ, केन के किनारे टहलता रहेगा। सोचता रहेगा कि देश की प्रकृति इतनी समृद्ध है, उस देश के किसान के बेटों की भूख पीढ़ी-दर पीढ़ी क्यों बढ़ती जा रही है?

—रामचन्द्र तिवारी

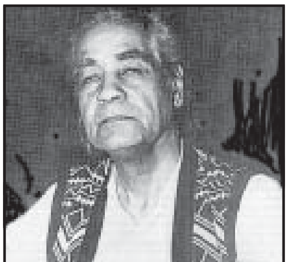

शायर अली सरदार जाफरी

उर्दू के मशहूर शायर ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित **अली सरदार जाफरी** का 86 वर्ष की अवस्था में 1 अगस्त को मुम्बई में निधन हो गया। सरदार जाफरी का जन्म 29 नवम्बर, 1913 को बलरामपुर, गोण्डा (उ०प्र०) में हुआ था।

ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित दो माह से मुम्बई अस्पताल में चिकित्सा करा रहे थे। सरदार जाफरी क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी और वक्ता थे।

वो बिजली-सी चमकी वो टूटा सितारा
वो शोला-सा लपका वो तड़पा शरारा
जुनूने-बगावत ने दिल को उभारा
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे।

स्मृति शेष

कवि केदारनाथ अग्रवाल

हिन्दी की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भ **केदारनाथ अग्रवाल** का बाँदा में 22 जून को निधन हो गया। 23 जून को प्रात: केन नदी के तट पर उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। उनके एकमात्र पुत्र अशोक अग्रवाल हैदराबाद से दूसरे दिन पहुँचे। केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को बाँदा जिले के कमसिन कस्बे में हुआ था। डॉ० रामविलास शर्मा तथा केदारनाथ अग्रवाल के बीच अत्यन्त प्रदीर्घ एवं प्रगाढ़ मैत्री थी। इसका प्रमाण है 'मित्र संवाद', दोनों के बीच 55 वर्षों का पत्र व्यवहार। उल्लेखनीय है कि 30 मई को दिल्ली में डॉ० रामविलास शर्मा का निधन हो गया।

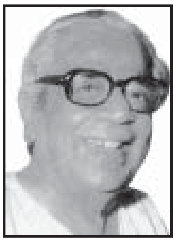

मराठी साहित्यकार

पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपाण्डे

8 नवम्बर, 1919 को जन्मे **पु०ल० देशपाण्डे** के नाम से विख्यात मराठी साहित्यकार का 16 जून को निधन हो गया उन्होंने विश्वविख्यात लेखकों की किताबें मराठी पाठकों को उपलब्ध कराने के लिए पहल की और अरनेस्ट हेमिंग्वे के 'द ओल्ड मैन एंड द सी' एका कोलियाने, ब्रेख्त, थ्री पेनी ऑपेरा, तीन पइशाच्या तमाशा, निकोलाई गोगोल, द गवर्नमेंट इंस्पेक्टर अमलदार, जार्ज बर्नाड शॉ, पैग्मैलियन, ती फुलराणी और सोफोल्स की कृतियों का मराठी अनुवाद किया। उनके अनुवादों का मराठी भाषियों ने स्वागत किया।

मराठी साहित्य में पु०ल० का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने लगभग हर विधा में लिखा और जीवन की जटिल परिस्थितियों और रोजमर्रा की समस्याओं को ऐसे अंदाज में प्रस्तुत करते थे कि लोग अपनी हँसी नहीं रोक पाते थे। पु०ल० के कई एकांकी, भाषण, संगीत रचनाएँ कैसटों के रूप में उपलब्ध है। हाल ही में विख्यात निर्देशक डॉ० जब्बार पटेल ने पु०ल० के जीवन पर एक वीडियो कैसेट पु०ल० वृत्तांत तैयार किया है।

बाल साहित्य की लेखिका

डॉ० विजय लक्ष्मी

बाल साहित्य की ख्याति प्राप्त लेखिका 60 वर्षीया **डॉ० विजय लक्ष्मी** का कैंसर की बीमारी से निधन हो गया। डॉ० विजय लक्ष्मी ने हिन्दी बाल साहित्य को काफी समृद्ध किया व उनके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होते रहे। हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास उनकी चर्चित कृति थी।

शिवदान सिंह दिवंगत

हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना के स्तम्भों में से एक प्रख्यात साहित्यकार एवं स्वतंत्रता सेनानी **शिवदान सिंह चौहान** का 29 अगस्त, 2000 को निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे तथा लम्बे समय से कैंसर और साँस की गम्भीर बीमारी से पीड़ित थे। 'आलोचना' तथा 'हंस' पत्रिका के प्रमुख सम्पादकों में थे।

कवि अरुण मित्रा का निधन

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित बंगला के जाने-माने कवि **अरुण मित्रा** का कलकत्ता में 22 अगस्त को प्रात: अपने निवास पर नींद में ही निधन हो गया। वे 91 वर्ष के थे।

प्रगतिशील कविता के मुख्य स्तम्भ अरुण मित्रा का जन्म १९०९ में जेसोर में हुआ था जो अब बांग्लादेश में है। 1943 में उन्हें 'प्रान्तो रेखा' के लिए काव्यग्रन्थ पुरस्कार और 1979 में 'सुधु राते स्वप्नों नाई' के लिए रवीन्द्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अरुण मित्रा को उनके काव्य संग्रह 'खुजते खुजते ऐतो दूरे' के लिए 1987 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। 1990 में उन्हें रवीन्द्र भारती ने डी०लिट्० की उपाधि से विभूषित किया और 1992 में फ्रांस सरकार ने उन्हें लेजियोन ऑफ आनर अवार्ड दिया।

पद्मश्री प्रोफेसर लक्ष्मीनारायण दूबे

सुप्रसिद्ध साहित्यकार **प्रो० लक्ष्मीनारायण दूबे** का सागर में 19 सितम्बर 2000 को निधन हो गया।

श्रीकृष्ण सरल

15 महाकाव्यों और लगभग 150 पुस्तकों के रचनाकार **श्रीकृष्ण सरल** का उज्जैन में निधन हो गया।

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

छात्र संस्करण : 125 सजिल्द संस्करण 250

वेद भारतीय संस्कृति की आत्मा है। विश्व को संस्कृति का ज्ञान देने का श्रेय वेदों को है। वेद विश्व-शान्ति, विश्व-बन्धुत्व, विश्व-कल्याण और सह-अस्तित्व के प्रथम उद्घोषक हैं। वैदिक संस्कृति का ज्ञान प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह ग्रन्थ लिखा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 13 अध्यायों में विभक्त है। इसमें वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक और उपनिषदों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही शिक्षा, व्याकरण, प्रातिशाख्य, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्रों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। शुल्बसूत्र शुद्ध रूप से ज्योमिति (Geometry) के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। इनमें पैथागोरस प्रमेय (Pythagorean Theorem) जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण प्रमेय दिए गए हैं।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक वाङ्मय की जो महनीय सेवा की है, उसका विस्तृत विवरण दिया गया है।

दो अध्यायों में वैदिक संस्कृति का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें वैदिक भूगोल, सामाजिक जीवन, आर्थिक स्थिति और राजनीतिक अवस्था का विशद विवेचन है।

ग्रन्थ के अन्त में 'वेदों में विज्ञान के सूत्र' नामक एक अध्याय दिया गया है। इसमें वेदों में वर्णित भौतिकी, रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, प्रौद्योगिकी, भूगर्भशास्त्र और से संबद्ध अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं। ग्रन्थ में नवीनतम अनुसन्धानों का भी समावेश है।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की गणना वेदों में मर्मज्ञ विद्वानों में की जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ लेखक के वैदुष्य का परिचायक है। प्रबुद्ध वेदप्रेमी पाठकों के लिए यह बहुमूल्य संग्रहणीय ग्रन्थ है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नवीनतम प्रकाशन

साहित्य समीक्षा

वाग्द्वार	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	250
साहित्य और संस्कृति	*डॉ० कन्हैया सिंह*	160
मध्यकालीन अवधी का विकास	*''*	160
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा	*डॉ० राजीव सिंह*	140
प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन	*डॉ० हरिनिवास पाण्डेय*	150
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष	*डॉ० रतनकुमार पाण्डेय*	400
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई	*डॉ० मदालसा व्यास*	200
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ	*डॉ० रामकली सराफ* सजिल्द 220, अजिल्द	110
अज्ञेय और शेखर : एक जीवनी	*डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी*	40
मानस-मीमांसा	*डॉ० युगेश्वर* सजिल्द	250
	अजिल्द	150

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

श्रीकृष्ण प्रसंग	*म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* सजिल्द 250, अजिल्द	150
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	250
अखण्ड महायोग	*म०म०पं० गोपीनाथ कविराज*	50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	*''*	80
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तत्त्वकथा	*म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* सजिल्द 250, अजिल्द	130
सब कुछ और कुछ नहीं	*मेहेर बाबा*	60

कहानी

मुट्ठी में बन्द तूफान	*अनिन्दिता*	95
आँगन में उगी पौध	*कुसुम चतुर्वेदी*	140

संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	*डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी*	300
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* सजिल्द	250
	अजिल्द	125
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	400
अभिज्ञान शाकुन्तलम् (कालिदास)	*डॉ० शिवशंकर गुप्त*	80

पत्रकारिता

संसद और संवाददाता (संसद रिपोर्टिंग)	*ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव*	120
पत्र, पत्रकार और सरकार (पुनर्वर्धित संस्करण)	*काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर*	120
इतिहास निर्माता पत्रकार	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	60
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यक पत्रकारिता	*इन्द्रसेन सिंह*	120

भूगोल

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव और विकास	*डॉ० श्रीकान्त दीक्षित* सजिल्द 150, अजिल्द	90

इतिहास-संस्कृति

भारतीय संस्कृति की रूपरेखा	*डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* सजिल्द 250, अजिल्द	120
उत्तिष्ठ कौन्तेय	*डेविड फ्रॉली* (बामदेव शास्त्री) सजिल्द 200, अजिल्द	125

विज्ञान

विज्ञान-कथा	*डॉ० एस०एन० घोष*	80

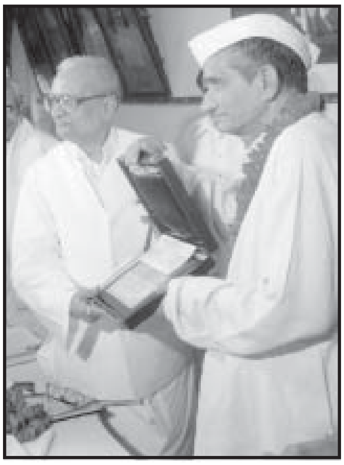

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री **श्री रामप्रकाश गुप्त** संस्कृत विद्वान् **डॉ० रामजी उपाध्याय** को विश्वभारती पुरस्कार से सम्मानित करते हुए

समीक्षकों की दृष्टि

वाग्द्वार

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

दो सौ पचास रुपये

"भूमिका सहित 'वाग्द्वार' के सभी निबन्ध प्रो० लोढ़ा के यश के अनुरूप हैं। प्रो० लोढ़ा आयु और सेवाकाल की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ आचार्य हैं। उनकी प्रौढ़ि का सारभूत अंश, जो उनकी बहुपठित व्युत्पन्नता से मण्डित है, इन निबन्धों में हमें मिलता है। इस ग्रन्थ की उत्कृष्टता और इसके नयनाभिराम मुद्रण और प्रकाशन की उत्कृष्टता के लिए लेखक और प्रकाशक दोनों को मेरी हार्दिक बधाई।" —**डॉ० कुमार विमल,** पटना

"अभी-अभी वाग्द्वार' की भूमिका 'वाग्वै पथ्या स्वस्ति:' पढ़कर समाप्त किया है। इस महत्त्वपूर्ण भूमिका और महत्त्वपूर्ण कृति के लिए आपको बधाई देता हूँ। पर इससे भी अधिक रेखांकित करने योग्य यह तथ्य है कि यह कृति विद्वानों, अध्येताओं, शोधार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों के लिए नई-पुरानी सूचनाओं का विलक्षण संग्रह है।"

-- **गंगाप्रसाद विमल,** दिल्ली

वाग्द्वार : विषयक्रम—भूमिका : वाग्वै पथ्या स्वस्ति:, (1) साधु संग्राम है रैन दिन जूझना, (2) तुलसी का कवि व्यक्तित्व, (3) तुलसी का रचना-संसार, (4) प्रीति पुरातन लखै न कोई, (5) सूर काव्य का पुनर्मूल्यांकन, (6) गुप्तजी का मानवतावाद, (7) यशोधरा : स्रोत, काव्य और विकास, (8) प्रज्ञापुरुष प्रसाद, (9) निराला : काल खलता रहा कला फलती रही, (10) महादेवी : छाया-सी काया वीतराग, (11) पं० माखनलाल चतुर्वेदी 'भारतीय आत्मा'।

ये किताबें

जोड़ती हैं मूल, सीमा तोड़ देती हैं,
ये किताबें ज़िन्दगी को मोड़ देती हैं।

हो रहे गुमराह उन को राह दिखलातीं,
अज्ञ में भी ज्ञान की शुभ चाह उपजातीं।

जो चल रहे पथ पर उन्हें मंजिल सुझाती हैं,
विविध रुचियों से बनी गलियाँ बताती हैं,
समझ विकसातीं हृदय में पूर्ण होने की,
मोह, मद, मिथ्याभिमति सम्पूर्ण खोने की।

सब को पिरोये एक में जो जिन्दगी का सूत,
पहचान उसकी दे करातीं वह पकड़ मज़बूत।

बिखरे सुमन संचित करें माला बनायें एक,
विश्वभर की सुमति-सुरभित मनुज की हो टेक॥

वाणी का क्षीर सागर

लेखक

कुबेरनाथ राय

सम्पादक

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

एक सौ बीस रुपये

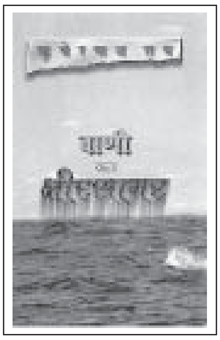

प्रख्यात ललित निबन्धकार श्री कुबेरनाथ राय आधुनिक जीवन-दृष्टि और साहित्य-सृष्टि के विवेचन में सर्वाधिक अनुदार निबन्धकार हैं। पिछले दिनों उनके आकस्मिक निधन से उनकी बहुत-सी रचनाएँ अप्रकाशित थीं। डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने ऐसी रचनाओं से सम्बन्धित बिखरे पृष्ठों को संकलित कर उनके हस्तलेखों को क्रमबद्ध कर सम्पादन किया और उनके ऐसे 14 निबन्धों से संकलित कर इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

सभी निबन्धों में वैशिष्ट्य का एक महत्त्वपूर्ण आधार तथा लेखक की अद्‌भुत रचना भंगिमा तथा भाषा शैली पूर्णत: उभरी है। इसमें अध्ययन-प्रसूत विचार-गाम्भीर्य और सह स्फूर्त भाव उद्वेग का अद्‌भुत सामंजस्य है। कहीं-कहीं तो दोनों का ऐसा संश्लेष है कि विचारों की गहनता रम्य हो गयी है और भावों की रम्यता गहन। सभी निबन्ध अपने-आप में उत्कृष्ट हैं जिनके कारण पुस्तक पठनीय के साथ ही संग्रहणीय बन पड़ी है। —**शैक्षिक पलाश, भोपाल**

इतिहास निर्माता पत्रकार

डॉ० अर्जुन तिवारी

अध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

भारतीय पत्रकारिता राष्ट्रीय अस्मिता का ज्वलंत उदाहरण है। इस राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अपने त्याग, तपस्या और साहस से विदेशी सत्ता से संघर्ष के लिए जन-जन में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। उनमें प्रमुख हैं—लोकमान्य तिलक, रामानन्द चट्टोपाध्याय, पं० मदनमोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, पं० झाबरमल्ल शर्मा, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी।

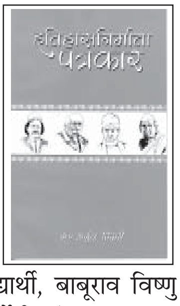

इन मनीषी पत्रकारों ने राष्ट्र के इतिहास को दिशा प्रदान करते हुए उसका निर्माण किया। इन मनीषियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवरण प्रस्तुत करती यह कृति। **साठ रुपये**

महाराष्ट्र के संत-महात्मा

ना०वि० सप्रे

दो सौ रुपये

तेरहवीं शताब्दी के अंत में, मुगलों के बार-बार आक्रमण तथा बाद में उनके शासनकाल में महाराष्ट्र में हिन्दू धर्म की तेजस्विता समाप्त होने लगी थी। एक ओर तो समाज रूढ़िवादी परम्पराओं से आतंकित था तो दूसरी ओर मुगल मराठों के साथ-साथ उनका हिन्दू धर्म, उनकी प्राचीन परम्पराएँ तथा उसकी अस्मिता को ध्वस्त करने के लिये कृतसंकल्प थे। इस विषम परिस्थिति में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि संतों ने महाराष्ट्र को सांस्कृतिक विनाश से बचा लिया।

ज्ञानेश्वर और नामदेव ने वारकरी पंथ का प्रचार किया और उसे उत्तरी भारत में सुदूर पंजाब तक फैलाया। तुकाराम ने बताया कि शोषित और पीड़ित की कोई जाति नहीं होती। शिवाजी जैसे शासक महापुरुष ने तुकाराम से आशीर्वाद ग्रहण किया, रामदास तो उनके राजनीतिक गुरु ही थे। ज्ञानेश्वर और नामदेव के काल में अध्यात्म के क्षेत्र में मानों जनतंत्र शुरू हो गया और प्रत्येक जाति में संत पैदा हुए। ज्ञानेश्वर और नामदेव ने वारकरी सम्प्रदाय की जो राह दिखाई उस पर कालान्तर में कबीर और नानकदेव भी चले और अन्य कितने ही संत उनका अनुगमन कर रहे हैं।

महाराष्ट्र के संतों ने महाराष्ट्र की जनता में आत्मविश्वास तथा दलित समाज में चेतना का सृजन किया। ऐसे संतों की प्रेरणास्पद जीवन-गाथा।

वाग्विभव

कल्याणमल लोढ़ा

पृ० 208 **दो सौ रुपये**

कई साहित्यिक समीक्षा कृतियों के लेखक लोढ़ाजी ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को रेखांकित करते हुए 'वाग्विभव' ग्रन्थ की रचना की है। भारतीय मनीषा के मूलभूत सार ब्रह्माण्ड और पिण्ड, समष्टि और व्यष्टि के पूर्ण तादात्म्य पर प्रकाश डालते हुए विद्वान लेखक ने सरलता, सौहार्द्र, सौमस्य, मृदुता और नियमवादिता को संस्कृति के महान मूल्यों की संज्ञा दी है। सम्पूर्ण पुस्तक कर्म तत्व, भक्ति तत्व, श्रद्धा तत्व, काम तत्व, नीति तत्व का गहन अलोकन करते हुए लेखक के व्यापक दार्शनिक चिन्तन का परिचय कराती है। 'वाग्विभव' के ये निबन्ध भारतीय संस्कृति के व्यापक और सघन मूल तत्वों से परिचय कराने में पूर्णत: सफल हैं। —**'हिन्दुस्तान', नई दिल्ली**

नवीनतम पुस्तकें

उपन्यास

तूफ़ानी रातें	*वीरेन्द्र पाण्डेय*	150
कसौटी	*सन्हैयालाल ओझा*	400
गठन	*राजकृष्ण मिश्र*	300
महाश्वेता	*सुधा मूर्ति*	175
जो मन टूटा अपना	*शीलभद्र*	155
साँझ सबेरे	*गुरदयाल सिंह*	150
दूसरा कृष्ण	*युगेश्वर*	125
कटा हुआ आसमान	*जगदम्बाप्रसाद दीक्षित*	195
नकेल	*शिवशंकरी*	75
बेवतन	*अशरफ़*	450
कुफ्र	*तहमीना दुर्रानी*	200
सौदामिनी	*विभूतिभूषण मुखोपाध्याय*	200
प्रवीण राय	*रामनाथ नीखरा*	195
समय और सर्जना	*वीरेन्द्र पाण्डेय*	150
अज्ञेय के दो असमाप्त उपन्यास		
छाया मेखल, बीनू भगत	*अज्ञेय*	150
सुबह के इन्तजार में	*वासुदेव*	200
कठगुलाब	*मृदुला गर्ग*	150
अन्तिम अरण्य	*निर्मल वर्मा*	225
कुछ दिन और	*मंजूर एहतेशाम*	125
आस्था के बन्ध	*भगदत्त महता*	200
दंगा	*राजकृष्ण मिश्र*	300
कितने पाकिस्तान	*कमलेश्वर*	250
औरतें	*खुशवन्त सिंह*	250
परदेस	*सुचित्रा भट्टाचार्य*	125
कालरात्रि	*सुदर्शन नारंग*	100
दहन	*सुचित्रा भट्टाचार्य*	125
गहरे पानी पैठ	*व्यास मिश्र*	175
आंवा	*चित्रा मुद्गल*	500
बैलकली	*अम्बिकाप्रसाद दिव्य*	200
जूझ	*आनन्द यादव*	245
सितारों की रातें	*शोभा डे*	195
वाइरस	*जयंत विष्णु नार्लीकर*	150
लाट की वापसी	*जगदीश चन्द्र*	150
कथा सतीसर	*चन्द्रकान्ता*	
खुले गगन के लाल सितारे	*मधु कांकरिया*	150
मेरे बेटे कहानी	*नादिन गोर्डाइमर*	195
टेढ़ी लकीर	*इस्मत चुगताई*	250
सोचा न था	*शोभा डे*	195
फूल इमारतें और बन्दर	*गोविन्द मिश्र*	225
रास्तों पर भटकते हुए	*मृणाल पाण्डे*	125
जंगल जहाँ शुरू होता है	*संजीव*	250
मुरदा घर	*जगदम्बाप्रसाद दीक्षित*	175
हिन्दोस्तां हमारा	*कमलेश्वर*	150
शान्तिदूत (गाँधी)	*भगवतीशरण मिश्र*	150
रामगाथा	*रमानाथ त्रिपाठी*	150
परछाईं नाच	*प्रियवंद*	120

कहानी

चल खुसरो घर अपने	*मिथिलेश*	100
कारावास के दिन	*शेरजंग*	175
खुशी के मौसम	*अली बाक़र*	125
कुछ पल अपने	*रश्मि कुमार*	125
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे*	200
यात्रा	*शान्ताराम*	150
खाना ठण्डा हो रहा है	*शिवशंकरी*	95
बेटे को क्या बतलाओगे	*रमाकान्त श्रीवास्तव*	125
रफ़ रफ़ मेल	*अब्दुल बिस्मिल्लाह*	125
सभी रिश्तों के नाम नहीं होते	*सुरेन्द्र उपाध्याय*	100
अरण्य गाथा	*शैवाल*	125
बेजुबान	*सुभाष शर्मा*	125
आँगन में उगी पौध	*कुसुम चतुर्वेदी*	140
मुट्ठी में बन्द तूफ़ान	*अनिन्दिता*	95

'भारतीय वाङ्मय' जनवरी 2001 से मासिक पाठकों की अपेक्षाओं को देखते हुए मासिक रूप में प्रकाशित होगा, ताकि पाठकों को भारतीय भाषा तथा वाङ्मय से सम्बन्धित समाचार समय से मिलते रहें। मासिक 'भारतीय वाङ्मय' का वार्षिक मूल्य 30 रुपये होगा।

— सम्पादक

भारतीय वाङ्मय

त्रैमासिक

वर्ष : 1 अक्टूबर-नव.-दिसम्बर 2000 अंक : 4

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 20.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2000

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in